Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

नाट्यशास्त्र में दोष-विमर्श

प्रियंका मौर्या
शोधच्छात्रा (संस्कृत विभाग), गया प्रसाद स्मारक
राजकीय महिला स्नातकोत्तर, महाविद्यालय अम्बारी (आजमगढ़),
उत्तर प्रदेश, भारत।

शोधसारांश – संस्कृत के लक्षण-ग्रन्थों में दोष का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। काव्यशास्त्र के आचार्यों का विचार था कि दोष काव्य का अपकर्ष या विघटन करने वाले होते हैं। अतः कवि को काव्य की रचना करते समय दोषों से सावधानी बरतनी चाहिए। काव्य दोषों का सर्वप्रथम उल्लेख भरतमुनि ने किया है। नाट्यशास्त्र में भरतमुनि दोषों का लक्षण न देकर सीधे दस प्रकार के दोषों की चर्चा करते हैं।

मुख्यशब्द – काव्यशास्त्र, भरतमुनि, नाट्यशास्त्र, दोष, दोषभेद, लक्षण, अपकर्ष, कवि, काव्य।

संस्कृत के लक्षण-ग्रन्थों में दोष का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आचार्यों ने काव्य व नाट्य की निर्दोषिता पर बहुत अधिक बल दिया था और कहा था कि काव्य की रचना को दोषों से रहित होना चाहिए। काव्यशास्त्र के आचार्यों का विचार था कि दोष काव्य का अपकर्ष या विघटन करने वाले होते हैं। अतः कवि को काव्य की रचना करते समय दोषों से सावधानी बरतनी चाहिए।

काव्य दोषों का सर्वप्रथम उल्लेख भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के सोलहवें अध्याय में किया था। जहाँ वे काव्य दोषों का वर्णन नाट्य दोषों के रूप में करते हैं और पाठभेद से उसे काव्य के दोषों के रूप में स्वीकार करते हैं-

एतेदोषास्तुविज्ञेज्ञाःसुरिभिनाटकाश्रयाः।

पाठान्तरं यथा-

1. एतेदोषास्तुकाव्यस्य यथा सम्यक् प्रकीत्तिताः।। [1]

नाट्यशास्त्र में भरतमुनि दोषों का लक्षण न देकर सीधे दस प्रकार के दोषों की चर्चा करते हैं, जो इस प्रकार हैं- 1गूढार्थ दोष, 2अर्थान्तर दोष, 3 अर्थहीन दोष, 4भिन्नार्थ दोष, 5एकार्थ दोष, 6अभिलुप्तार्थ दोष, 7न्यायादपेत दोष, 8 विषम दोष, 9विसन्धि दोष एवं 10शब्दच्युत दोष।

गूढार्थमर्थान्तरमर्थहीनंभिन्नार्थमेकार्थमभिप्लुतार्थम्।
न्यायादपेतंविषमंविसन्धिशब्दच्युतंवै दश काव्यदोषाः।। [2]

आचार्य भरतमुनि इन दोषों का नाट्यशास्त्र में लक्षण तो देते हैं, किन्तु इनके उदाहरण के विषय में चर्चा नही करते हैं। फिर भी बाद के आचार्यों ने इन दोषों के लक्षण उदाहरण सहित अपने काव्य-ग्रन्थों में दिया है। नाट्यशास्त्र पर लिखी गयी टीका अभिनवभारती में आचार्य अभिनवगुप्त ने इन दोषों की व्याख्या करते समय इनका उदाहरण भी देते हैं। जिससे भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में वर्णित इन दोषों को समझने में सहायता मिलती है। इन दोषों का उदाहरण सहित लक्षण क्रमशः इस प्रकार हैः-

1.गूढ़ार्थ दोषः- आचार्य भरतमुनि गूढ़ार्थ दोष का लक्षण देते हुए बताते हैं कि - **'' पर्यायशत्वाभिहितंगूढ़ार्थमभिसंज्ञितम्।''** [3]

अर्थात् जहाँ पर पर्यायवाचक शब्दों के द्वारा किसी विषय को कहा जाय वहाँ पर गूढ़ार्थ दोष होता है।

यहाँ पर्याय वाचक शब्द का तात्पर्य केवल पद से नही, अपितु पद, वाक्य और उनके अर्थों के पर्याय शब्द से है। जिसका उल्लेख आचार्य अभिनवगुप्तनाट्यशास्त्र की टीका अभिनवभारती में इस प्रकार करते हैं- ''गूढ़ार्थ यथा-पर्याय शब्देतितत्रशब्दानांपदानांवाक्यस्यतदर्थानां च।'' [4] अर्थात् ' पद , वाक्य और उसके अर्थ को पर्याय शब्दों से कहना ' गूढ़ार्थ' दोष है' और वे ऐसे पर्याय शब्द को गूढ़ार्थ दोष मानते हैं जो बलात् अर्थ की कल्पना करके रखा गया हो। जिसका उदाहरण देते हुए वे कहते हैं कि - ' दशरथ' कहना हो तो, दशरथ के लिए उसके पर्याय शब्द के रूप में 'एकाधिकनवविमान' पद का प्रयोग करना गूढ़ार्थ दोष है, क्योंकि यहाँ बलात् या यदृच्छा अर्थ की कल्पना

करके ' एकाधिकनवविमान' शब्द को प्रयुक्त हुआ है। जिसका बलात् अर्थ संधि करने पर दश रथों के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

2.अर्थान्तरदोषः- नाट्यशास्त्र में अर्थान्तर दोष का वर्णन आचार्य भरतमुनि ऐसे दोष के रूप में करते हैं जहाँ पर वर्णनीय विषय का वर्णन न कर कवि अवर्णनीय विषय का वर्णन करने लगता है, **' 'अवर्ण्य वर्ण्यतेयत्रतदर्थान्तरमिष्यते।।''** [5] अर्थात् जहाँ पर अवर्णनीय विषय का वर्णन किया जाय उसे ' अर्थान्तर' दोष कहते हैं।

नाट्यशास्त्र की टीका अभिनवभारती में आचार्य अभिनवगुप्तअर्थान्तर दोष का उदाहरण इस प्रकार दिये हैं- **चिन्तामोहमनङ्गमङ्ग तनुतेविप्रेक्षितंसुभ्रुवः।** [6]अर्थात् ' सुन्दर भ्रुकुटियों वालीरमणी का सकटाक्ष निरीक्षण चिन्ता और मोहमनङ्ग को उत्पन्न करने वाले कामदेव को उत्तेजित करता है।'

यहाँ पर कवि किसी नायिका के सौन्दर्य का वर्णन करने के प्रसंग में कामदेव के स्वीकृत होने पर भी उस नायिका के चिन्ता, मोह आदि अवर्णनीय विषय का वर्णन करने लगता है। जिससे यहाँ पर अर्थान्तर दोष प्राप्त होता है।

3.अर्थहीन दोषः- अर्थहीन दोषों से आचार्य भरतमुनि का तात्पर्य ऐसे दोषों से है, जो असम्बद्ध अर्थ वाले और अवशेष अर्थ वाले हो। **''अर्थहीनंत्वसम्बद्धं सावशेषार्थमेदं च।''** [7] अर्थात् जहाँ पर असम्बद्ध अर्थ हो अथवा अवशेष अर्थ हो, वहाँ 'अर्थहीन दोष' होता है।' असम्बद्ध अर्थ का उदाहरण अभिनवगुप्तअभिनवभारती में इस प्रकार देते हैं- **''अद्यापि स्मरसिरसालसंमनो में मुग्धायाःस्मरचतुराणि।''** [8]अर्थात् 'हे रस से मन्थर (अलस) मेरा मन आज भी तु उस मुग्धा काम के विषय में चतुर वाक्यों का स्मरण कर रहे हो।'

यहाँ पर पूर्वापर का व्यवधान होने से अर्थों में असम्बद्धता पायी गयी है इसलिए यह असम्बद्ध अर्थहीन दोष का उदाहरण है। अवशेष अर्थ में अर्थहीन दोष का उदाहरण अभिनवभारती के अनुसार इस प्रकार है-

''स महात्मा भाग्यवशान्महापथमुपागतः।'' [9]

अर्थात् ' वह महात्मा भाग्यवश महापथ में पहुँच गया'

यहाँ कवि प्रकरण- साक्षेप वस्तु को भाग्य रूप में निश्चित कर देता है, किन्तु यहाँ पर इसका अवशेष अर्थ अभाग्यवशात् भी हो सकता था। इस कारण यहाँ पर अवशेष अर्थहीन दोष हुआ।

4.भिन्नार्थदोषः- आचार्य भरतमुनिभिन्नार्थ दोष का लक्षण दो प्रकार से करते हैं-

"भिन्नार्थमभिविज्ञेयमसभ्यंग्राम्यमेव च।।" [10]

अर्थात् असभ्य एवं ग्राम्य अर्थ के सूचक अर्थ को ' भिन्नार्थ' दोष कहा जाता है।

"विवक्षितोऽन्यएवार्थोयत्रान्यार्थेनभिद्यते।

भिन्नार्थ तदपि प्राहुःकाव्यंकाव्यविचक्षणाः।।" [11]

अर्थात् जहाँ पर विवक्षित अर्थ अन्य हो और उससे अन्य अर्थ का (अविवक्षित का) कथन किया जाय वहाँ भी विद्वानों ने भिन्नार्थक दोष कहा है।

आचार्य अभिनवगुप्त भरतमुनि के इस भिन्नार्थ दोष की व्याख्या करते समय इसके तीन भेद अभिनवभारती में मानते हैं, और उसका संक्षिप्त उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं जो इस प्रकार है-

(1) **" तत्रमृष्योदूरसंबन्धव्यधानेसतियत्रार्थो"** [12]

अर्थात् जहाँ पर अर्थ दूर का सम्बंध होने से व्यवधान के कारण अर्थ मृष्य (अविज्ञेय) अर्थात् अर्थ समझने में कठिनाई हो।

इस प्रकार के दोष का उदाहरण है-

ज्वरंभुञ्जीत सज्जातमलपाकंचिरिस्थितम्।

अजादुग्धादेनंहन्यात्लिदोषोत्कोपसंभवम्।। [13]

अर्थात् " बकरी के दूध के साथ चावल (भात) खाया जाय तो चिरकाल से स्थित जिसमें मल का परिपाक हो गया है ,ऐसे त्रिदोष से उत्पन्न ज्वर (सन्निपात ज्वर) नष्ट हो जायेगा।

अतः यहाँ पर बकरी के दूध के साथ चावल खाने का सम्बंध ज्वर के साथ दूर का है, क्योंकि बकरी के दूध के साथ चावल खाने का नजदीकी सम्बंध मल के दूर करने से है जिससे मल के दूर होने पर ज्वर अपने आप शान्त हो जायेगा। इस प्रकार यहाँ पर दूर का सम्बंध होने से व्यवधान के कारण अर्थ को समझने में कठिनाई हो रही है जिससे इसे भिन्नार्थ दोष कहते हैं।

(2) दूसरे प्रकार का भिन्नार्थ दोष अभिनवगुप्त के अनुसार वह है " जहाँ पर ग्राम्य या असभ्य अर्थ का कथन हो।" इस का उदाहरण इस प्रकार वर्णित है-

'' भद्रंभजस्वमामिदंतेदास्यामि'' [14]

अर्थात् ' हे भद्रे ! मेरी सेवा करो मै, तुझे यह वस्तु दूंगा।''

यहाँ पर कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को लालच देकर अपनी सेवा करवाना चाहता है, जो कि असभ्य अर्थ का सूचक है। इसलिए यह भिन्नार्थ दोष है।

(3) अभिनवगुप्त के अनुसार तीसरा भिन्नार्थ दोष वह है जहाँ पर विकसित अर्थ का भिन्न अर्थ में कथन हो। जैसे

-''स्याच्चेदेष न रावणःक्वनु पुनः सर्वत्र सर्वेगुणाः'' [15]अर्थात् यदि यह रावण न होता फिर सभी गुण सब जगह नही होते।

यहाँ पर रावण की अनुपादेयत्व उच्छिष्ट था, किन्तु ' क्वनु पुनः' इस कथन से भिन्न अर्थ का '' सर्वत्र सर्वेगुणाः'' के रूप में होने लगता है जिससे यहाँ पर भिन्नार्थ दोष हुआ।

5. एकार्थदोषः-एकार्थ दोष का लक्षण भरतमुनि के अनुसार इस प्रकार है-

''अविशेषभिधानंयत्तदेकार्थमितिस्मृतम्।'' [16]

अर्थात् अविशेष (विलक्षणता-हीन) अर्थ का कथन करना एकार्थ दोष कहलाता है। इस दोष का स्पष्टीकरण अभिनवगुप्त के अभिनवभारती में दिये गये उदाहरणों के द्वारा इस प्रकार हुआ है- ''कुन्देन्दुहारहरहासहसितम्'' यहाँ पर कुन्द, चन्द्र, हार, शिवजी का हास ये सभी किसी राजा के यश को श्वेत बतलाने के लिए कहे गयेहैं, जो कि ये सब एक प्रयोजन मात्र यश को बताने के अर्थ में हुई है, इसलिए यहाँ पर एकार्थ दोष हुआ।

6. अभिलुप्तार्थदोषः- नाट्यशास्त्र के अनुसार अभिलुप्तार्थ वह दोष है जहाँ पर पाद में अर्थ समाप्त हो जाये (एकवाक्यता न रहे) वहाँ ' अभिलुप्तार्थ' दोष होता है।

'' अभिलुप्तार्थविज्ञयंयत्पदेनसमस्यते ।''[17]

इसके स्पष्टीकरण के रूप में अभिनवभारती में यह श्लोक दिया गया है-

स राजा नीतिकुशलाः, सरःकुमुदशोभितम्।

सर्वप्रियावसन्तश्रीर्ग्रीष्मेमालतिकागमः।। [18]

उपर्युक्त श्लोक में अलग-अलग अर्थ की समाप्ति अलग-अलग पादों में होती है। इस कारण यहाँ पर अभिलुप्तार्थ दोष हुआ।

7. न्यायादपेतदोषः- भरतमुनि का न्यायादपेत दोष से तात्पर्य ऐसे दोषों से है, जहाँ पर प्रमाणों से वर्जित (रहित) विषयों का कथन किया जाता हो। **''न्यायादपेतंविज्ञेयंप्रमाणपरिवर्जितम् ।''** [19] यहाँ प्रमाण का तात्पर्य है देश, काल, कला एवं शास्त्र से, जिसका उल्लेख अभिनवगुप्त ने अभिनवभारती में इस प्रकार किया है- **''न्यायादपेतंदेशकालविरूद्धकलाशास्त्रादिविरूद्धं च''** [20] न्याय से अपेत (प्रमाण रहित) अर्थात् देश, काल के विरूद्ध और कला तथा शास्त्र के विरूद्ध के कथन न्यायादपेत दोष है।

इसके उदाहरण रूप में यह श्लोक बताया गया है-

''सुवीरेष्वस्ति नगरी मथुरा नाम विश्रुता।

अक्षोटनालिकेराढयायस्याःपर्यन्तभूमयः।। [21]

अर्थात् सुवीर में मथुरा नाम की एक प्रसिद्ध नगरी है। जिसके पास की भूमियाँ अखरोट और नारियल से समृद्ध है''। यहाँ पर कवि किसी देश का वर्णन करते समय उस देश के नाम के अनुसार वर्णन न कर उसके विरूद्ध वर्णन करने लगता है जिससे यहाँ पर देश- काल विरूद्ध कथन होने से ' न्यायदपेत' दोष हुआ।

8. विषम दोषः- आचार्य भरतमुनि विषम दोष को वृत्तों में होने वाले दोष के रूप में वर्णित करते हैं। **'' वृत्तभेदोंभवेद्यत्रविषमं नाम तदभवेत्।''** [22] अर्थात् जहाँ वृत्तों में भेद हो वहाँ विषम नामक दोष होता है। इसके उदाहरण के रूप में अभिनवगुप्त इस पंक्ति को देते हैं- **''अयिपश्यसिसौधमाश्रितामविरलसुमनोमालभारिणीम्''**

यहाँ पर प्रथम पाद को नव अक्षरों से प्रारम्भ कर दूसरे पाद में बारह अक्षरों पर समाप्त होने से वृत्तो में भेद हो गया। जिससे यह विषम दोष हुआ।

9.विसंधिदोषः-भरतमुनि का विसंधि दोष से तात्पर्य ऐसे दोषों से है, जहाँ पर शब्द उपश्लिष्ट (जुड़ाव) न हो वहाँविसंधि दोष होता है। **''अनुपश्लिष्टशब्दंयत्तद्विसन्धीतिकीर्तितम्।''** [23] आचार्य अभिनवगुप्तअभिनवभारती में विसंधि दोष की व्याख्या करते समय विसंधि दोष होने के तीन आधारों की चर्चा करते हैं 1 दो वर्णों या पदों का नैरन्तर्य, 2 विचार का योग 3 परस्पर एक का दूसरे में लय होना और ऐसे स्थानों पर भी विसंधि दोष मानते हैं जहाँ पर शब्द अनुपारूढ़ अर्थात् अयुक्त हो या पारुष्य को उत्पन्न करने वाला हो।

10. शब्दच्युतदोषः - शब्दच्युत दोष से तात्पर्य ऐसे दोषों से है जहाँ पर शब्दों एवं स्वरों की योजना न किया जाय वहाँ पर शब्दच्युत दोष होता है। **''शब्दच्युतञ्चविज्ञेयमशब्दस्वरयोजनात्।''**[24]

सन्दर्भ-सूचीः-

1.नाट्यशास्त्र, डॉ0पारसनाथद्विवेदी कृत व्याख्या, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

2.नाट्यशास्त्र

3.वही 16/89

4.अभिनवभारतीरविशंकर नागर, के0एल0जोशी, परिमल संस्कृत ग्रन्थमाला संख्या 4

5.नाट्यशास्त्र16/89 भाग-2

6.अभिनवभारती, भाग-2

7.नाट्यशास्त्र, 16/90

8.अभिनवभारती, भाग-2

9.वही, भाग-2

10.नाट्यशास्त्र, 16/90

11.वही 16/91

12.अभिनवभारती, भाग-2

13.वही, भाग-2

14.वही, भाग-2

15.वही, भाग-2

16.नाट्यशास्त्र, 16/92

17.वही, भाग-2

18.अभिनवभारती, भाग-2

19.नाट्यशास्त्र, 16/93

20.अभिनवभारती, भाग-2

21.वही, भाग-2

22.नाट्यशास्त्र, 16/93

23.वही, 16/94

24.वही, 16/94